ISSN 2395-051X

आतंकवाद के उदय में कतिपय विचारधाराओं का प्रभाव

डॉ. रजनी दुबे
प्राध्यापक - राजनीतिशास्त्र
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

आतंकवाद दहशतगर्दी, उग्रवाद, अलगाववाद, नक्सलवाद ... जैसे नामों से जाना जाने वाला यह अपराध इतना नापाक है कि इसने इन्सानों को हैवान बना दिया है और इंसान, इंसान के खून का प्यास हो गया है।

आमतौर पर आतंकवाद किसी एक देश में पैदा होता है और वहीं पर आतंकवाद अपने पैर पसारता रहता है लेकिन संचार क्रांति के इस युग में सारी दुनिया ने देखा कि तमाम दूसरी चीजों की तरह आतंकवाद का भी भूमण्डलीकरण हो गया है। अब आतंकवाद किसी एक देश का प्रोडेक्ट नहीं रहा है। आज बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की तरह आतंकवाद का भी कार्पोरटाईजेशन हो गया है। एक देश दहशतगर्दी की मैन्युफैक्चरिंग करता है आतंकवाद की मार्केटिंग करता है तो किसी दूसरे में उसकी सेलिंग की जाती है।

कुछ विचारधारायें जो न केवल आतंक की अनदेखी करती है बल्कि उनको प्रतिपादित भी करती है आतंकवाद को परोसने के महत्वपूर्ण श्रोत हैं। जैसा कि हनाह अरेनहट ध्यान आकर्षित करते हैं कि - ''विचारधारा सर्वसत्तावाद की प्रवर्तक हैं एवं सर्वसत्तावाद आतंक को जन्म देता है'' हम पाते है कि बड़ी संख्या में क्रांतिकारी विचारधाराओं ने घोर वामपंथियों एवं घोर दक्षिणपंथी गुट के नव-फासी-वदियों को अभिप्रेरित करने में उत्प्रेरक की भूमिका का निर्वाह किया। फासीवाद एवं साम्यवाद के अतिरिक्त 1960 के दशक के उत्तरार्ध में यूरोप, यू.एस.ए., जापान एवं अन्य अनेक राष्ट्रों में प्रारंभ हुये छात्र विद्रोहों ने जो नव-उपनिवेशवाद, फैलते हुये पूंजीवाद एवं अन्याय के विरूद्ध संघर्ष का दावा करता था, नव-आतंकवादियों एवं तृतीय विश्व के माओ, होचिमिन्ह एवं शी गुवेरा जैसे क्रांतिकारियों से प्रेरणा प्राप्त की। जीनपाल सान्ते एवं हर्बटे मार्कयूज अनेक आतंकवादी गुटों एवं व्यक्तियों जिन्होने आतंक को प्रगति, स्वतंत्रता एवं भ्रातृत्व के इंजन के स्तर तक उन्नत कर दिया था के बौद्धिक मार्गदर्शक बने रहे। उनके लिये - 'आतंक वह गारंटी था जिससे मेरा पड़ौसी मेरा भाई बना रहेगा, आतंक मेरे पड़ोसी को मुझसे उस हिंसा की धमकी से बांध कर रखेगा जो उसके विरूद्ध प्रयुक्त की जावेगी अगर वह 'गैर-भाई चारे' का दुस्साहस करता है।' आतंक राज्य को मजबूती प्रदान करने वाली सीमेण्ट है एवं वह लोग जिन्होने अपने आपको पूर्ण रूप से राज्य को समर्पित कर दिया है, जब तक राज्य के आदेशों का पालन करते हैं, वास्तविक रूप से स्वतंत्र हैं। जहां माकर्स ने हिंसा को अपने आप में लक्ष्य न मानकर उसे सिर्फ क्रांति की अनिवार्य टाई (A Necessary Midwife of Revolution) माना है, वहीं सात्रे हिंसा एवं आतंक को अपने आपमें लक्ष्य मानकर गरिमामय बताते हैं।

वर्तमान दौर के आतंकवादी कार्लोज मेरीघेला के उन सुझावों को अमल में लाते हैं जिसमें उसने अधिकारियों को क्रूर दमन एवं अति प्रतिक्रिया के जाल में उलझाकर परिस्थिति के सैन्यीकरण का विचार दिया था। ऐसी स्थिति में जनता उनसे विमुख होकर आतंकवादी युक्तियों या आतंकवादियों से क्रियाशील सहयोग

हेतु भागेगी। शी गुवेरा के दर्शन ने न केवल क्यूबा में फिडेल कास्त्रो को मार्गदर्शन दिया बल्कि अन्य लेटिन अमरीकी तथा एफ्रो-ऐशियन राष्ट्रों के ढेरों क्रांतिकारी आतंकवादी भी उससे निर्देशित हुये। अलजीरिया में एफ. एफ.एन. के काले कार्यकर्ता आज भी उस फ्रेन्ट्रज फेनन को अपना मार्गदर्शक मानते हैं। फेनन के आज भी 'काले लोगों' के मध्य ढेरों समर्थक हैं, विशेषकर संयुक्त राज्य अमेरिका में।

बुकनिन की आराजकतावादी-विनाशकाकरी विचारधारा एवं नेशयव, मालहेसा तथा क्रोपाटकिन की सम्पूर्ण-विनाश सम्बन्धी शिक्षा ने विश्व के भाव को पल्लवित किया। लेकिन वास्तविक व्यवहार में इन विचारकों के वास्तविक समर्थक मुख्यतः विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी थे जिनकी अति कल्पना की विचारधारा प्रमुख निरर्थक कवायद थी। वह सभी सम्पन्न एवं सुविधायी घरों में वंशज थे अतः "मेहनतकश लोगों की भाषा बोलना तो दूर वह काल्पनिक दुनिया के उस खण्ड में विचरण करते थे जो घटिया नव-माकर्सवादी नारों एवं सात्रे एवं कारक्यूज के अधपके तथा खतरनाक आदर्शो से मिलकर गढ़ी गई थी।" यदि इटली के संदर्भ में हम देखें तो पता चलता है कि यहां पराजित विचारधारा ने अपने आपको जिन्दा रखने के लिये हिंसा का सहारा लिया। इटली में जब मुसोलिनी की तानाशाही समाप्त हुयी तो उसके समर्थकों ने उग्र प्रतिक्रया व्यक्त की। मुसोलिनी तो समाप्त हो गया लेकिन उसका चिंतन एक विचारधारा के रूप में जीवित रहा। ये मुसोलिनी समर्थक फासिज्म की स्थापना हेतु हिंसा के सहारे सक्रिय रहे। इसी नवफासिस्टवाद और वामपंथी विचारधारा के बीच संघर्ष कालान्तर में शुरू हुआ जो धीरे-धीरे आतंकवाद में बदल गया।

जब फासिस्ट आतंकवादी संगठन अस्तित्व में आये तो प्रतिक्रियास्वरूप कई वामपंथी आतंकवादी गिरोह भी बन गये। इस कड़ी में सबसे पहले 'बाइस अकइबर सर्किल' नामक आतंकवादी संगठन अस्तित्व में आया। इसके अलावा उस समय 'आर्म्ड डायरेक्ट एक्शन ग्रुप' नामक वामपंथी संगठन ने भी आतंकवाद फैलाने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

इटली में आतंकवाद दरअसल दो विचारधाराओं का आपसी टकराव है। एक विचारधारा का नेतृत्व मुसोलिनी के समर्थक फासिस्ट करते हैं तो दूसरी विचारधारा का प्रतिनिधित्व उग्रवामपंथी करते हैं तथापि आतंकवाद आज भी चंद विशिष्टों बुद्धिजीवी विचारक, राजनीतिज्ञ के एकाधिकार वाला क्षेत्र बना हुआ है। उक्त सभी विशिष्ट उस विशाल जन समुदाय की तरफ से कार्य करते हैं जो मूलतः निष्क्रिय रहती है। जैसा कि हॉन्सबान ने टिप्पणी की है कि "सभी क्रांतिकारी थोड़े बहुत औचित्य के साथ अपने आपको मुक्त एवं प्रगतिशील विचारो वाले छोटे से उस विशिष्ट समूह के रूप में देखते हैं जो अज्ञानी आम लोगों के विशाल एवं गतिहीन समूह के मध्य एवं उन्हीं के अंतिम लाभ हेतु क्रियाशील रहता है। ऐसे आम लोग, जब उन्हें स्वतंत्रता प्राप्त होती है तो निश्चित रूप से उसका स्वागत करते हैं, परन्तु उनसे यह अपेक्षा नहीं की जाती है कि वह उसको प्राप्त करने के संघर्ष में सहभागिता करें। यह तो केवल विशिष्ट वर्ग ही है जो अपनी व्यक्तिगत हैसियत बेहतर होने के बावजूद भी वर्तमान तौर तरीकों से मोह भंगित होकर अन्यायपूर्ण स्थितियों एवं सामाजिक-आर्थिक तथा राजनैतिक बुराईयों को देखकर स्वयं चरमवादी कदम उठाते हैं।

उपरोक्त पूर्व दशायें एवं विचारधायें जो आतंकवाद के प्रारम्भ में परिणित होती हैं के अतिरिक्त कतिपय बोधक कारक ऐसे है जो आतंकवादियों को अपने क्रियाकलाप पूर्ण करने के लिये बेहतर अवसर प्रदान करते हैं। यह कारक उन्हें अपने उद्धेश्यों को पूर्ण कराने में सहयोग प्रदान करते हैं। उनके महत्वपूर्ण उद्धेश्यों में

से एक है अपने सिद्धान्तों के लिये प्रचार प्राप्त करना ताकि वह स्वदेशी जनमानस एवं साथ-साथ विदेशी जनता एवं सरकारों की सहानुभूति प्राप्त कर सके। इस हेतु कतिपय दर्शनीय कृत्य जैसे बंधक बनाना विमान एवं व्यक्तियों का अपहरण करना आदि किये जाने होते हैं।

सन्दर्भ

1. विजय करन, वार वाई स्टिलय : टेरेरिज्म इन इण्डिया (नई दिल्ली इंडस, 1995)
2. लियोन ट्राटस्की, अगेन्सट इंडीबीजूअल टेरेरिज्म (न्यूयार्क : पार्थफोइट प्रेस, 1994)
3. पंजाब, पास्ट एण्ड प्रेजेन्ट (पी.पी.पी.) अक्टूबर 1970)
4. पॉल विलकिंग्सन टेरेरिस्ट मेवमेंट (कोलार्जे : वेस्ट व्यू प्रेस 1979)
5. प्रकाश सिंह, नागालैण्ड (नई दिल्ली : समय प्रकाशन 2001)
6. डॉ. निशांत सिंह, सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली 2002